हिन्दी लेखिकाओं की आत्मकथाओं में स्त्री विमर्श

डॉ. हरिशंकर प्रजापति
सहा. आचार्य हिन्दी
राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय महापुरा
EMAIL : HSPRAJA@GMAIL.COM

स्त्री जाति को पुरूष की अर्द्धांगिनी कहा है, क्योंकि स्त्री पुरूष के सम्बन्ध से ही इस सृष्टि का निर्माण हुआ है। तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' में कहा है कि बिना पुरुष के स्त्री व स्त्री के बिना पुरूष अधूरा है। पूर्ण मानवीय जीवन में दोनों की सहभागिता परमावश्यक है। एक का भी अभाव जीवन- गाड़ी को चलाने में सक्षम नहीं हो सकेगा। वेद-पुराणों में हो या मनुस्मृति में स्त्री को धार्मिक कार्यों में उपस्थित होना अनिवार्य माना गया है। दान- पुण्य तभी सफल होता है, जब स्त्री- पुरुष (पति-पत्नी) मिलकर करेगें। वैदिक काल में स्त्री को सम्मान प्राप्त था। मध्यकाल में आकर उसकी स्थिति दयनीय हो गई थी। धीरे-धीरे विविध परिवर्तनों ने स्त्री अस्मिता को कुचलने का प्रयास किया। स्वातंत्र्योत्तर काल में सुधारवादी नीतियों ने स्त्री विमर्श कर मानवीय संवेदनाएं प्रस्तुत की हैं।

स्त्री विमर्श का अर्थ एवं विकासः- हिन्दी महिला कथाकारों की संवेदना यथार्थपरक है। नारी शब्द संस्कृत भाषा के नर शब्द का स्त्री रूप माना गया है। "नर संस्कृत के 'नृ' नय धातु से बना है नृ 'नय' की 'अ' में सन्धि होकर 'नर' शब्द बना है" और नारी शब्द 'न'+'अञ्' डीन के सन्धि से बना हैं।"[1] ऑक्सफोर्ड डिक्सनरी में 'वुमन' शब्द को स्पष्ट करते हुए लिखा है:-

i. A female worker or employee.

ii. A female domestic help

iii. A wife of lover"[2]

व्यावहारिक अंग्रेजी हिन्दी कोश में Lady और Female के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा हैं-Lady 'A' Woman of good social position and good manners (भद्रमहिला) A woman (स्त्री औरत) They lady of the house (गृहस्वामिनी) 'मादा' स्त्री जाति मादा स्त्री सुलभ, नारी सुलभ।"[3]

नालन्दा विशाल शब्दसागर में औरत नारी, स्त्री, वामा, महिला, प्रिया, अबला आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है।[4]

साहित्य में स्त्रियों की भूमिका इतिहास से ही देखने को मिली है। वैदिककालीन कात्यायनी, मैत्रेयी जैसी विदुषी महिलाएँ हैं ,जिन्हें आज भी उदाहरण के रूप में याद किया जाता है। आदिकाल, मध्यकाल और रीतिकाल में स्त्री की भूमिका में पर्याप्त अच्छे- बुरे परिवर्तन हुए। कभी पूर्ण अधिकार मिले तथा कभी सभी अधिकारों पर पूर्णतया अंकुश लग गया। पुरुषवादी समाज की सामंतशाही सोच, पितृप्रधान समाज की

रूढ़िवादिता, धर्मान्धता एवं परिवेशानुकूल परिस्थितियों ने स्त्री के स्त्रीत्व रूप की अपेक्षा उसे अबला कहकर उस पर मनमाना अत्याचार किया, किन्तु युगीन परिवेश में व्याप्त विषमताओं ने स्त्री के स्त्रीत्व की रक्षा करने में अपनी भूमिका को संशयात्मक रूप में प्रस्तुत कर उसकी अस्मिता की रक्षा नहीं की, वरन् उसे रौंदने पर उतारू हो गया।

स्त्री चेतना की जागृति लाने वाली तस्लीमा नसरीन की 'लज्जा' को पढ़ने पर पता चलता है कि स्त्री की दशा एवं दिशा का जिम्मेदार कौन है? केवल यौन शुचिता ही स्त्री की अस्मिता रक्षा है या फिर उसके कार्य या उसके साथ होने वाले दुराचार, तिरस्कार, बलात्कार आदि पुरुषवादी कुकृत्य? समाज में व्याप्त जातीय, धार्मिक एवं साम्प्रदायिक भ्रांतियाँ आदि समस्याओं के पीछे महत्वपूर्ण पुरूष की गन्दी सोच है। परितोष बनर्जी की सम्मति है। "नारीवाद उस प्रवृत्ति का विन्यास चाहती है।"[5] सिमोन द बॉउवार की 'द सैकण्ड सैक्स' सन् 1949 में प्रकाशित हुई, जिसका हिन्दी अनुवाद प्रभा खेतान ने 'स्त्री उपेक्षिता' के नाम से किया तथा उसमें स्त्री चेतना को उजागर कर पुरुषवादी संवेदना की पोल खोल दी है तथा उसकी एक (यौन शुचिता) की रक्षा ही नहीं हृदय, मन और भावना से स्त्री पर अंकुश लगाने वाले पितृसत्तात्मक स्वरूप की निन्दा की है।

"नारी की झांई परत, अन्धा होत भुजंग" (कबीरदास) "जिमि स्वतंत्र होई विगरहिं नारी" (रामचरित मानस) तुलसीदास जी ने नारी स्वान्तत्र्य को उचित नहीं माना। युगपुरूष कवियों ने स्त्री शोषण की युगीन मानसिकता को ही पुष्ट किया है।

महादेवी वर्मा की श्रंखला की कड़ियाँ' में संकलित लेखों में पितृ सत्ता की कैद से छूटकर स्वतन्त्र होने की हिमाकत की है। कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल आदि लेखिकाओं ने स्त्री विमर्श में स्त्री अस्मिता, दलित, शोषित, पीड़ित स्त्री की दशा एवं दिशा पर विचार किया है। पितृसत्तात्मक सामंती व्यवस्था ने इनकी यथार्थ रचनाओं को अश्लीलता की भंगिमा कहकर भर्त्सना की, किन्तु वास्तविक यथार्थ का कटु सत्य इनकी कृतियों में ही दृष्टिगोचर होता है।

डॉ. सुमन राजे ने 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' में आत्मकथा साहित्य को अन्य साहित्य से अलग सत्य एवं यर्थाथपूर्ण रचना माना है। "आत्मकथा और समीक्षा का क्षेत्र भी लगभग सूना ही पड़ा है। महिलाओं की आत्मकथाओं का हिन्दी में अभाव तो एक मुद्दा बन गया है।"[6]

कुसुम अंसल की आत्मकथा 'जो कहा नहीं गया' में अपनी व्यथा-कथा को जीवन के प्रत्येक सन्दर्भ से जोड़कर रखती है। कुसुम अंसल ने लिखा है कि "मेरा लेखन मेरी यह यात्रा है, जिसमें प्रवाहित होकर मैं लेखिका बनी थी, मेरे उन अनुभवों का कच्चा चिट्ठा जिनको अपने प्रति सचेत होकर मैने रचनात्मक क्षणों में दिया।"[7]

चन्द्रकिरण सोनेरेक्सा की 'पिंजरे की मैना' आत्मकथा स्त्री विमर्श का ज्वलंत उदाहरण है। आत्मकथा साहित्य के सन्दर्भ में स्वयं ने कहा "आत्मकथा का केवल एक उद्देश्य होता है, अपनी जीवन यात्रा का निष्पक्ष दर्शक की तरह पुनरावलोकन करना। 'पिंजरे की मैना' उसी का फल है।"[8]

डॉ. प्रतिभा अग्रवाल ने 'दस्तक जिन्दगी की' (प्रथम खण्ड में) व 'मोड़ जिन्दगी का' (दूसरे खण्ड में) हिन्दी व बंगला रगंमंच से जुड़े महत्वपूर्ण व्यक्तियों के योगदान का तटस्थ मूल्याकंन किया है।"[9]

'शिकंजे का दर्द'में डॉ. सुशीला टाकभौरे ने वर्ण व्यवस्था के अभिशाप तले पिस रहे वाल्मीकि (भंगी) समाज की अतिरिक्त विषमताओं व जातिवाद का खुलकर उल्लेख किया है।

कृष्ण अग्निहोत्री ने 'लगता नहीं दिल मेरा' आत्मकथा में स्त्री जीवन में होने वाले भेद-भाव को अपनी स्थिति को भोगने की व्यथा-कथा को प्रस्तुत किया है और नारी की सुरक्षा का प्रश्न उठाया है। पुरूष की गिद्ध दृष्टि के प्रभाव से स्त्री बच नहीं पायी है, चाहे वह पूर्ण सुसंस्कृत हो। स्वघटित घटनाओं का उल्था भूमिका में इस प्रकार प्रकट किया है। "मैंने तो जिन्दगी में यह एहसास किया है कि अकेले रहने वाली महिला पर प्रत्येक पुरुष अपना अधिकार जमाना चाहता है किसी की दृष्टि उसके रूपये, जायदाद या किसी की नजर उसके शरीर पर।"[10]

मन्नू भण्डारी की आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' के शीर्षक से ही स्पष्टीकरण दिया है कि यह मेरी आत्मकथा कोई नई नहीं हैं। इसलिए इसका शीर्षक 'एक कहानी यह भी' रखा है। जिस तरह कहानी जिन्दगी का एक अंश मात्र ही होती है, एक पक्ष, एक पहलू उसी तरह यह भी मेरी जिन्दगी का एक टुकड़ा मात्र ही है, जो मुख्यतः मेरी लेखकीय यात्रा पर केन्द्रित है।" [11]

प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' सर्वप्रथम 'हंस' पत्रिका में प्रकाशित हुई। "वे आत्मकथा को 'स्ट्रीपरीज का नाच' कहती है। आप चौराहे पर एक-एक कर कपड़े उतारते जाते हैं। लिखने वाले के मन में आत्म- प्रदर्शन का भाव किसी न किसी रूप में मौजूद रहता है, मन के किसी कोने में हल्की सी चाहत लिया कर, पाठक वृन्द अपना-अपना निर्णय लेने में स्वतन्त्र है। उनका मन, वे इस नाच को देखे या फिर पलट कर चले जाएं।"[12]

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा को दो भागों में बांटा है- 'कस्तूरी-कुण्डली बसै' तथा 'गुड़िया भीतर गुड़िया' ये औपन्यासिक कथा है, जिसमें माँ कस्तूरी की जीवनी (स्त्री जाति) है।कस्तूरी का वैवाहिक जीवन सुखद नहीं रहा। कस्तूरी मैत्रेयी को परामर्श इस प्रकार देती है "स्त्रीत्व माने स्त्री शक्ति। तू उस स्त्री शक्ति का गँवाने पर तुली है।"[13] स्नातक कक्षा की विद्यार्थी मैत्रेयी अपनी माँ से स्वयं विवाह की कह देती है- माँ, मेरी शादी कर देना, क्योंकि पुरुषवादी सामंती शक्ति उसे मानसिक व शारीरिक पीड़ा देती है। कह भी देती है कि "माँ तुम खफा क्यों होती हो? मेरी स्वाभाविक इच्छाओं को कठोर उपवास में मत बदलो। मैं अपनी इन्द्रियों को कसते- कसते दूसरों की हवस का शिकार हुए जाती हूं।"[14]

साठोत्तरी हिन्दी आत्मकथा को नवीन आयाम देने में ('हादसे) रमणिका गुप्ता का योगदान विशिष्ट रहा है। जो सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक विभिन्नता की पोल खोलती है। राजनेता लक्ष्मी और स्त्री की बर्बादी कैसे करते हैं" नेताओं के यहाँ औरतों को फुसलाने और फंसाने के लिए दलाल होते हैं, जो केवल औरतों को डिमारेलाइज और हतोत्साहित करने में माहिर होते हैं। ताकि राजनीति में आई स्त्रियों इनकी शर्तों पर जीने को विवश हो जाएं।"[15]

पदमा सचदेवा की 'बूंद बावड़ी' प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या' मैत्रेयी पुष्पा की 'गुड़िया भीतर गुड़िया' रमणिका गुप्ता की 'हादसे' कृष्ण अग्निहोत्री की 'लगता नहीं दिल मेरा' किरण बेदी 'हिम्मत है' आदि में नारी की विषमता त्रस्त जीवन में घुटन त्रासदी, पीडा व अपनों द्वारा प्रताड़ित होने की वेदना मुखरित हुई।

स्त्री-विमर्श विषय कोई नवीन नहीं, वरना पिछले कई दशकों से चली आ रही स्त्री की संघर्षशील व्यथा की पुकार, ललकार है। यह त्रासदी, पीडा, घुटन व अन्याय को सहन करने वाली धीर, गम्भीर नारी जाति के साथ होने वाले अन्याय का विरोध महिला आत्मकथाकारों ने अपनी जीवनी या आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत कर स्त्री के स्त्रीत्व या तेज को जगाने में अपनी महती भूमिका प्रस्तुत की है। आज स्त्री सतीत्व की रक्षा नहीं हो रही है, बल्कि उसके साथ घिनौने कुकृत्यों ने उसकी अस्मिता पर प्रश्नचिह्न अंकित कर दिए हैं। महिला आत्मकथाकारों ने स्वजीवन मे घटित यथार्थ को प्रस्तुत कर नारीवादी चेतना को नया माहौल प्रदान किया है।

संदर्भ सूची

1. सं. रामचन्द्र वर्माः मानक हिन्दी कोश, पृ. 250
2. ऑक्सफार्ड डिक्शनरी लेडी पृ. 794, वुमन पृ. 1644
3. डॉ. बदरीनाथ कपूर व्यावहारिक अंग्रेजी हिन्दी कोश पृ. 453
4. नालन्दा विशाल शब्द सागर सं. नवल जी पृ. 694
5. 16. परितोष बनर्जी : स्त्री विमर्श और साहित्य, नया ज्ञानोदय नव. 2006
6. डॉ. सुमन राजे : हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास पृ. 295
7. कुसुम अंसल : जो कहा नहीं गया पृ. 13
8. चन्द्र किरण सोनरेक्सा पिंजरे की मैना पृ. 15
9. डॉ० प्रतिभा अग्रवाल दस्तक जिन्दगी की मोड जिन्दगी का पृ. 34
10. कृष्णा अग्निहोत्री : लगता नहीं दिल मेरा (भूमिका)
11. मन्नू भण्डारी : एक कहानी यह भी पृ. 8
12. प्रभा खेतान : अन्या से अनन्या पृ. 255
13. मैत्रेयी पुष्पा : कस्तूरी कुण्डल बसे पृ. 61
14. वहीं पृ. 59
15. रमणिका गुप्ता : हादसे पृ. 245